जैनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशालाओ को कैसे सुचारू और सारगर्भित रूप से चलाया जाए

श्रद्धेय बड़े पंडित जी के वाक्य हैं-
'संस्कार बिना की सुविधाएं पतन का कारण है', बच्चों में धार्मिक संस्कार आए, उनमें धर्म का बीजारोपण, हो इसी उद्देश्य के साथ पाठशाला चलाई जाना चाहिए।

'धन्य है वह माता पिता जो अपनी संतान को भौतिक धन वैभव के साथ साथ धर्म के संस्कार भी देते हैं।' Actual में बच्चों के सबसे पहले गुरु वही होते हैं। आज के समय में अधिकतर माता पिता को धर्म के प्रति रुचि कम ही है।

आज के इस Modern World में बहुत सुनने में आता है कि बच्चे बहुत Tension में रहते, बच्चे Suicide करने की ओर अपना कदम बढ़ा रहे हैं, पर उनमें अगर जैन धर्म के संस्कार हो, श्रद्धान हो, संयम हो, तो वह यह कदम कभी नहीं उठाएगा।

पाठशाला में वे सीखते हैं कि कैसे दैनिक क्रियाएं करें, सबके साथ कैसा व्यवहार करें, क्या विचार करें, कैसे हम बिना Tension के, बिना उलझन के जीवन जिए, कैसे हम संतुष्ट रहे, जैन धर्म के सिद्धांतों को जीवन में अपनाने से उनका जीवन धर्म मय तो होगा ही, लौकिक जीवन भी समतामय रहेगा।

पाठशाला के बच्चे बड़े होकर अपने जीवन को अलग-अलग रूप में देना चाहेंगे –

- कोई इनमें से धर्म की प्रभावना में जीवन लगाएगा।
- कोई ऐसी भावना भाते हुए जितना समय हो सके उतना इस मार्ग में लगाएगा।
- हो सकता है कोई समय न दे पाए पर वह ज्यादा Tension में कभी नहीं रहेगा, गलत काम नहीं करेगा, Success के पीछे गलत रास्ता नहीं choose करेगा, संतुष्ट रहेगा, मंद कषायी होगा। इन संस्कारों को पा व्यक्ति कहीं भी चला जाए वह खुश रहता है, गलत मार्ग नहीं अपनाता, धार्मिक संस्कार हमेशा उसे Direction देते हैं।
- इन बच्चों में से कई बच्चे ऐसे होंगे जिन्हें यह मार्ग पूर्ण रूप से रुचेगा, वह अपना जीवन इसमें देंगे, जिनवाणी को ह्रदयंगम भेद ज्ञान का अभ्यास करेंगे, जल्द ही सम्यक दर्शन प्राप्त करेंगे और कुछ ही भवो में मुक्ति प्राप्त करेंगे। इस भव में अपना हित करेंगे, युवा अवस्था में ही विद्वान बन जैन धर्म का ध्वज हर जगह फहराएंगे।

बच्चों के भविष्य की नीव एक अच्छा सच्चा हित चाहने वाला Teacher रखता है ।पाठशाला के Teacher होने से उस पर बहुत-सी Responsibities है। सबसे बड़ा रोल इन सब में जीवन

शैली का है, बच्चे बातों से कम जीवन से ज्यादा सीखते हैं। इसके लिए जरूरी है Teacher जैन धर्म का, जैन धर्म के सिद्धांतों का दृढ श्रद्धानी हो। वस्तु स्वरूप का ज्ञाता हो, जीवन दयामय हो। ज्ञान से ज्यादा श्रद्धा महत्वपूर्ण होती है। वह Regular स्वाध्याय करता हो और उन्हें ख्याति नाम की चाह ना हो । बच्चों पर इसका बहुत Impact पड़ता है। जनता भी युवाओं के व्यक्तित्व को देखकर attract होगी। उन्हें प्रभावना करने की मंगल भावना हो।

मैं अब Teacher का Nature केसा हो इस पर अपने विचार रखना चाहता हूं –

- वह बच्चों को समझे, बच्चों का thought-level समझें और उस अनुसार पढ़ाएं। अच्छे तर्क दे।
- बच्चों के साथ संबंध बनाएं उनकी Problem solve करें, सही advice दे इससे बच्चों में अपनत्व की भावना आएगी और धर्म के प्रति भी प्रीति बढ़ेगी।
- Teacher मंद कषायी हो। उनमें सब्र व सहनशीलता हो।

में अब बात करते हैं Teachers की ability और उनके पढ़ाने के तरीके की-

- टीचर को Class Handle करना चाहिए, Discipline maintain करना आना चाहिए।
- बच्चों को आज के समय के हिसाब से 'Learn-by-fun' तरीके से पढ़ाना चाहिए जो बच्चों का चित्त लगाए रखें।
- बच्चों को हमेशा धर्म में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दे। Game खिलाए, Quiz, अंताक्षरी आदि जिससे उनका revision होता है, उपयोग अच्छा लगता है, पाठ आदि कंठस्थ होते हैं । इसके लिए उनको Price बाटें जिससे बच्चे attract हो।
- बच्चों के साथ Outdoor games भी खेलना चाहिए जिससे उनका over-all development हो, जिससे बच्चे Modern दुनिया की तरफ attract ना हो।
- उनकी छुट्टियों के दिन उनसे पूजन, जिनवाणी सजाना, संभालना आदि कार्य करवाना चाहिए।
- इन सब में Discipline maintain रहे पर उन्हें कभी डाँटे नहीं, डराए नही, जोर से ना बोले, जल्दी-जल्दी भी ना बोले।
- बच्चों को Stories पसंद आती है, उन्हें महापुरुष के चरित्र सुनाने चाहिए, उन्होंने किन समयो में समता धारी थी। उनके Example देना चाहिए।
- पढ़ाने के लिए Quartely, Half-yearly course बनाना चाहिए।
- बच्चों को Different activities करवानी चाहिए जैसे Different games, outdoor games, essay, quiz, drawing, कंठ पाठ आदि और Best Boy, Best Girl बनाना चाहिए जिससे बच्चों का उत्साह बड़े।

साथ ही इस बढ़ते हुए Digital world में मेरे हिसाब से-

- बच्चों को Presentation के Through पढ़ाना चाहिए ।
- Stories भी अगर Drawing या Video में होगी तो ज्यादा ध्यान खीचेगी।
- Games भी Computer पर हो तो ज्यादा attract करेंगे।
- Quiz भी digital हो तो बच्चों का ध्यान खींचेगी।
- जिन Topics पर Possible हो उन्हें Practically करके दिखाना चाहिए जैसे पानी छानना, पूजन करना आदि।

इन सभी में बस यही भावना है कि बच्चों में धर्म के संस्कार हो वह इस मार्ग में आगे बढ़े और अपना कल्याण करें इसी भावना के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

Rishabh Ramesh Chand Patni,
Anjani Nagar,
Indore.